जय जय पिय प्यारी, सुकुमारी, भोरी भारी नथवारी।

जय जय पिय प्यारी, सुकुमारी, भोरी भारी नथवारी।
बलिहारी, छवि प्यारी, ऊँचे महल अटा वारी ॥

पुस्तक : ब्रज रस माधुरी
पद संख्या : 47
पृष्ठ संख्या : 109
सर्वाधिकार सुरक्षित © जगद्गुरु कृपालु परिषत्

कवि : जगद्गुरु श्री कृपालु जी महाराज
स्वर : सुश्री अखिलेश्वरी देवी

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/34515/title/jay-jay-piye-pyari-sukumaari--bhori-bhari-nathwari

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |